P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

कथावार हृदयनारायण मेहरोत्रा ''हृदयेश'' का उपन्यास शिल्प

विनीता रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
कन्या महाविद्यालय आर्य समाज,
भूड़, बरेली

सारांश

वर्तमान हिन्दी–उपन्यास हिन्दी–साहित्य के लिए एक नई देन है। आज उपन्यास की लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। प्रत्येक साहित्यकार अपनी रचना को पाठकों की रूचि के अनुरूप व यथार्थपरक बनाना चाहता है। कहानी की अपेक्षा उपन्यास ही वह गद्यविद्या है, जो हमें समाज के यथार्थ रूप से अवगत कराती है। प्रसिद्ध अंग्रेज़ी साहित्यकार बेवस्टर के अनुसार – ''उपन्यास एक ऐसा कल्पित विशालकाय गद्यमय आख्यान है, जिसमें एक ही कथानक के अन्तर्गत यथार्थ जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों और क्रिया–कलापों का चित्रण रहता है।''[1]

उपन्यास के क्षेत्र में शिल्प विकास के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न किए गए और इस काल में आश्चर्यजनक विकास भी हुआ। ''शिल्प कला के विकास और प्रगति में उन प्रतिभाओं का बहुत बड़ा योगदान है जिन्हें अपने युग की समस्याओं का गहन तथा तीखा अनुभव हुआ था लेकिन इतने प्रयासों के बाद भी यह समस्या बनी ही रह गयी अर्थात् किन उपायों का अवलम्बन करके एक औपन्यासिक कृति समग्र रूप से अपने युग का प्रतिनिधित्व कर सकती है, इसके विषय में कोई ऐसे निष्कर्ष नहीं निकाले जा सके जो अन्तिम कहे जा सकते हों।''[2]

मुख्य शब्द : पूँजीवादी शोषण, बेरोजगारी, निर्धनता, उपन्यास शिल्प का अध्ययन।

प्रस्तावना

स्वांतत्रयोत्तर उपन्यासकारों में हृदयेश जी प्रमुख स्थान रखते हैं। युग की ज्वलन्त समस्याओं व निम्नवर्गीय त्रासदी को यथार्थवादी दृष्टिकोण से अपनाते हुए उन्हें एक विशेष प्रकार से अपने साहित्य में निहित करके प्रस्तुत करना हृदयेश जी की शिल्पगत विशेषता है। हृदयेश जी स्वयं कहते है कि ''हर कथ्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक उपयुक्त शिल्प मांगता है। कश्य स्वयं ही निर्धारित करता है कि वह अपने को प्रभविष्णु रूप में किस कोण से अभिव्यंजित कर सकेगा। शायद कथ्य से भी अधिक कठिन चुनना होता है, उसके लिए उपर्युक्त फार्म इसी के साथ कथ्य शिल्प से घुला मिला होता है कि उसे अलग नहीं किया जा सकता है।''[3]

हृदयेश जी ने युग पटल पर रखकर ही समाज की हर समस्या का समाधान किया है। उन्हें भावुक व कोरा शब्द विन्यास पसन्द नहीं है। उनकी रचनाओं में समाज का यथार्थवादी दृष्टिकोण तथा सामाजिक समस्याओं के प्रति चिन्ता के साथ निहित हैं। हृदयेश जी के अनुसार – ''लेखक की स्थिति नकलनवीस की नहीं है। वह सृष्टा है। वह यथार्थ को पुनर्सजित करता है। हृदयेश को कहानी का आज का रूप पसन्द है जो भाषा के गुलदस्तों कला की नक्कासी चौकाने वाले प्रयोगों अयास अभिव्यक्ति लिए हुए हैं।''[4]

आज उपन्यास मात्र मनोरंजन का साधन नहीं है। उसकी रचना साहित्यकार किसी उद्देश्य से करता है, जो उपन्यास निरूद्देश्य लिखे जाते हैं वे सार्थक नहीं होते, ''कुछ विशेष सिद्धान्तों अथवा विचारों के प्रतिपादन के उद्देश्य से तो बहुत ही कम उपन्यास लिखे जाते हैं, पर सभी उपन्यासों में कुछ न कुछ विचारअथवा सिद्धान्त आप से आप आ जाते हैं।''[5]

शिल्प की दृष्टि से हृदयेश जी का कथा साहित्य सशक्त व अत्यन्त लोकप्रिय है। वह समाज के कटु यथार्थों को उद्घाटित करने के साथ–साथ मानव के क्लान्त हृदय को आनन्द विभोर करने की भी समता रखता है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में मजदूरों, मालिकों, शिक्षित, अशिक्षित, कैदी, पुलिस, जज आदि सभी का चित्रण किया है इसी के साथ उन्होंने भाषा विशेष पर भी ध्यान दिया है। कथा साहित्य की भाषा की विशेषता उसके पात्रों के अनुकूल होने में है जिससे वे जीते जागते वास्तविक जगत के पात्र लगे। इसके लिए हृदयेश जी ने

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

अंग्रेज़ी, उर्दू स्थानीय शब्दों को सहज रूप में प्रयोग किया है उनके लिए भाषा जिंदगी की नब्ज है। हृदयेश जी के शब्दों में – ''भाषा का दर्जा बहुत कुछ जंगली हाथी जैसा होता है। इस हाथी को पालतू बनाना होता है। पालतू बन जाने पर यह पालतू बनाने वाले की इच्छानुसार काम करता है।''[6]

हृदयेश जी के उपन्यासशिल्प का परिचात्मक अध्ययन

उनके उपन्यासों में प्रगतिवादी चिन्तन धारा का जीवन्त चित्रण हुआ है। सामन्ती और पूँजीवादी शोषण के दुष्परिणाम, आधुनिक जीवन की विसंगतियाँ जो मानवीय गौरव को खण्डित कर रही हैं, ध्वंसोन्मुख समाज की यथार्थता पर लिखे उनके लघु उपन्यास समाजपरक वयैक्तिक उपन्यास हैं, जिनके पात्र प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने सामाजिक, सन्दर्भों से जुड़े हुए हैं और समाज तथा व्यक्ति के सम्बन्धों को रेखांकित करते हैं। इनमें पगली घंटी और सांड उपन्यास उल्लेखनीय हैं, इनमें मानव के द्वारा मानव के शोषण पर तीव्र व्यंग्य है।

हृदयेश जी ने मानव मन की गुत्थियों और कुंठाओं को मूर्त रूप देकर उपन्यास विद्या का नवीन मार्ग प्रशस्त किया है। हृदयेश जी मनोविज्ञान के विशेषज्ञ हैं। मनोविश्लेषण से उपन्यास की नई रचना प्रक्रिया एवं उनका सम्पूर्ण कथा साहित्य प्रवाहपूर्ण व हृदयस्पर्शी बन पड़ा है। उन्होंने अपने उपन्यासों में विषय वस्तु पात्रों, भाषा शैली आदि शिल्पगत तत्वों का देशकाल और वातावरण के अनुसार भव्य चित्रण किया है। वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हें किसके पक्ष में खड़े होना है। अपने लेखन में धर्म, शिक्षा, संस्कृति और न्याय व्यवस्था की वास्तविकता का उद्घाटन करके वह वस्तुतः उन लोगों की लड़ाई ही लड़ते हैं, जो अन्याय और उत्पीड़न के शिकार हैं। ''इन निम्न मध्यवर्गीय पात्रों में भी वह ऐसे तत्वों को ढूंढ लेते हैं जो यथास्थिति के विरोध में सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सक्रिय हैं। एक सी समस्यायें और उनके लिए एक बंधा बंधाया शिल्प किसी भी रचनाकार के आगे आने वाले रचनात्मक संकट की सूचना हो सकता है। एक सजग कलाकार की तरह हृदयेश इस खतरे को सूंघते हैं। वह अपनी जमीन नहीं छोड़ते लेकिन उस पर बसने वाले लोगों के संघर्ष और सपनों को वह एक नया आयाम देने की सजगता अवश्य बरतते हैं।''[7]

अपने उपन्यासों में हृदयेश जी शिल्प के प्रति काफी सजग दिखायी देते हैं। ''मेरी नजर में मेरा शिल्प सादा है। इसे काम चलाऊ भी कहा जा सकता है। जो मेरा अभिप्रेत है, मैं उसे सम्प्रेषित कर लेता हूँ। कोई अच्छी स्तरीय रचना, कश्य, शिल्प और भाषा इन तीनों के ताल मेल से बनती हैं। जितना महत्व कश्य रखता है, उतना ही महत्व उसका निर्वाह रखता है। लेकिन शिल्प पर अत्याधिक ध्यान देने से सम्प्रेषणीयता के लिए अनेक अवरोध पैदा हो जाते हैं। रचना के अन्दर प्रवेश मुश्किल हो जाता है।''[8]

यदि आपके उपन्यासों की शिल्पगत विशेषताओं की ओर ध्यान दिया जाए, तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इनके कथानक का प्रारम्भ नायक के आगमन से होता है। नाटकीय तत्वों का समावेश इनके उपन्यासों की एक अन्य विशेषता है। शिल्प के स्तर पर सफेद घोड़ा काला सवार प्रयोगशील कृति है।

''सफेद घोड़ा काला सवार'' का कथानक देश की न्याय प्रणाली पर एक करारा कंग्य है। लेखक की दृष्टि उन मासूम व भोले भाले लोगों पर केन्द्रित है, जो अन्याय के विरूद्ध लड़ना चाहते हैं, और जब वह न्याय पाने की लालसा लेकर न्यायालयों की ओर जाते हैं, तो उनके हाथ सिर्फ निराशा, असफलता व बरबादी ही लगती है।

किसी उपन्यास की मूल कहानी को कथानक कहा जाता है। सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी आलोचक एडविन क्योर का कहना है कि ''उपन्यास के तत्वों में कथानक ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण और स्पष्ट है, इसी पर उपन्यास का ढाँचा खड़ा होता है।''[9]

यूँ तो हृदयेश जी के उपन्यासों के कथानक सामाजिक मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आंचलिक आदि अनेक प्रकार के हैं। परन्तु मुख्य रूप से उनके कथानक सामाजिक हैं। उनके उपन्यासों में समाज की विभिन्न समस्याओं जैसे अंधविश्वास, बेरोजगारी, निर्धनता विभिन्न प्रकार के अपराध तथा भ्रष्ट होती न्याय व्यवस्था आदि पर प्रकाश डाला गया है।

समाज में बेरोजगारी एंव निर्धनता की समस्या उग्र रूप धारण करती जा रही है। हृदयेश जी ने जहां 'दंडनायक' उपन्यास में बेरोजगारी की समस्या पर प्रकाश डाला है।[10] वहीं उपन्यास 'पगली घंटी' के कथानक में गरीबी की बेबसी को बहुत निकट से दिखाया है।[11] 'पगली घंटी' उपन्यास में उन्होंने अपराध जगत को भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है – ''अपराधों का एक बड़ा कारण भूख, तंगी, बेरोजगारी तथा आर्थिक विषमता है और दूसरा बड़ा कारण कमजोर वर्ग को निरन्तर मिलने वाला तिरस्कार, निर्वासन और अप्रांसगिक बनाकर उनको हाशिए पर फेंका जाना है। इस स्थिति ने इस वर्ग के लोगों को पाशविक कुंठा से भर दिया है। ऐसे लोग बहुत छोटी और मामूली सी बात पर दंगा, फसाद, अपहरण, बलात्कार हत्या कर देते हैं।''[12] भ्रष्ट होती न्याय प्रणाली पर भी हृदयेश जी ने आक्रोश व्यक्त किया है।[13]

हृदयेश जी के उपन्यास जहाँ आंचलिक उपन्यासों की कोटि में आते हैं वहीं मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से भी परिपूर्ण हैं। अपने उपन्यास 'हत्या' में शिवनारायण के माध्यम से एक सीधे–सीधे व्यक्ति का मनोविज्ञान बताया है। चुन्नू पहलवान के अत्याचारों से पीड़ित व कानून से न्याय न पाने की उम्मीद उसे अपराधी बनने पर मजबूर कर देती है। ''चून्नू ने इतने अमानवीय और जघन्य अपराध किये थे कि मृत्युदंड पाने का हकदार वह बहुत पहले ही हो चुका था इसलिए उसको सजा देकर मैंने कोई अपराध नहीं किया है। उसको यह सजा कानून के द्वारा ही मिल जाना चाहिए थी। जब कानून ने उसे सजा नहीं दी, मैंने दे दी।''[14]

उपन्यास दंडनायक के माध्यम से हृदयेश ने राजनीति को भी विषय बनाया है। उन्होंने वर्तमान राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेईमानी, देश के साथ धोखा आदि जैसी बुराईयों का पर्दाफाश हुआ है उन्होंने देश की खोखली राजनीति से होने वाले राष्ट्र पतन की ओर चिन्ता

व्यक्त की है। उनके हृदय में देश के उत्थान तथा जागरूकता के प्रति जो आकांक्षा है, उसे उन्होंने अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। उनके कथा साहित्य की यह विशेषता रही है कि राजनीतिक तत्वों की विवेचना उपन्यासों व कहानियों की साहित्यिक विशेषताओं पर हावी नहीं हो सका है। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक भ्रष्टाचार अन्याय व शोषण को अपने साहित्य के माध्यम से जन–जन की दारूण–व्यथा– कथा बना दिया है, साथ–ही–साथ उसके समाधान हेतु अपने विचार भी प्रस्तुत किये हैं।

आपका मानना है कि समाज में समय–समय पर परिवर्तन होते रहते हैं, जो कि अत्यन्त आवश्यक है। आपने स्वतन्त्रता से पूर्व एवं बाद में भारत की स्थिति व परिवर्तन पर अत्यन्त गहराई से ध्यान दिया। आपके कथा साहित्य में जहां एक ओर देश से प्रेम करने वाले पात्र दिखाई पड़ते हैं, वहीं कुछ पात्र अंग्रेजों की गुलामी करते हुए भी दिखाई दिये हैं। अपने भ्रष्ट राजनीति का यथार्थपरक चित्रण किया है। स्वार्थी व धनलोलुप अधिकारी, कुर्सी व सत्ता के मद में चूर हुए नेता, निर्दोष व मासूम जनता को प्रताड़ित करती हुई आर्मी, निरपराधी को फांसी की सज़ा सुनाने वाला न्यायाधीश आदि का यथार्थवादी चित्रण करके आपने देश व देश के नागरिकों को जागरूकता व देश प्रेम का संदेश दिया है, ताकि वह इन भ्रष्ट सत्ताधारियों का डटकर मुकाबला कर सकें और अपने देश को स्वस्थ व सुनहरा भविष्य प्रदान कर सकें। 'दंडनायक' में काकोरी केस का वर्णन करके हृदयेश जी ने उपन्यास को सुदृढ़ बनाया।

अध्ययन का उद्देश्य

हृदयेश जी के सम्पूर्ण कथा साहित्य का उद्देश्य जीवन को समस्त विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता के साथ अभिव्यक्ति देना है। मनुष्य के वाह्य एवं दृश्य व्यक्तित्व के अन्दर छिपे हुए आन्तरिक विश्व को प्रकाश में लाना, ढोंग, आडम्बर, कट्टरता एवं अन्यायपूर्ण वृत्तियों को चित्रित करना, कलाकार के द्रष्टा एवं भोक्ता व्यक्तित्व का पारस्परिक द्वन्द्व चित्रित करना हृदयेश जी के कथा साहित्य का महत्वपूर्ण उद्देश्य कहा जा सकता है। लेखकीय जीवन दर्शन के रूप में परोक्षतः अपने मन्तव्यों को भी कहीं–कहीं व्यक्त किया गया है, यथा संयुक्त परिवारों की परम्परा एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति के दोषों का अंकन, परम्परागत संकीर्ण होती हुई नैतिकवादी मान्यताओं का खंडन एवं समाज के पिछड़े दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं समर्थन तथा पूंजीवादी वर्ग के भ्रष्टाचार का कड़ा विरोध हृदयेश जी के कथा साहित्य का मूल उद्देश्य है।

हृदयेश जी का कथा साहित्य कथानक की मौलिकता पात्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चरित्रांकन, वातावरण की जीवंतता, भाषा शैली की सशक्ता आदि सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ है। उनके कथानकों में अनुभव का बोध है। पात्रों में आत्मीयता है और भाषा में सरलता, स्वाभाविकता व रोचकता है। हृदयेश आम लोगों की तकलीफदेह जिन्दगी को उठाने वाले प्रगतिशील धारा के कथाकार है। उन्होंने युग जीवन के व्यापक फलक को उठाया है और कहीं न कहीं यह चिंता व्यक्त की है कि वह संस्कृति की अग्रगामी चेतना का सूत्रधार सिद्ध हो। साथ–ही–साथ रवीन्द्र नाथ टैगोर की इन पंक्तियों द्वारा समाज का एवं समाज में रहने वाले व्यक्तियों का मार्ग प्रशस्त किया है–

''यदि तोर डाक शुने न आसे, तबे एकला चले रे।
यदि केउ कथा न कच, ओ रे, ओ रे अभागा।
तबे एकला चलो रे......''[15]

निष्कर्ष

हृदयेश जी ने अपने कथा साहित्य में शिल्प के मुख्य तत्वों के आधार पर रचना की है। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों प्रमुखतः निम्न मध्य वर्ग को जीवंत करने का भरसक प्रयास अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। आपने अपनी रचनाओं में चाहे वह उपन्यास हो या कहानी, फ्रायड, एडलर एवं युग के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का यथासंभव अधिकाधिक आश्रय लिया है।

आपके कथा साहित्य में शिल्प, शैली एवं कलावृत्ति की नवीनता परिलक्षित होती है। आपके सभी उपन्यास व कहानी संग्रह शिल्प सौन्दर्य से युक्त हैं। शिल्प सौन्दर्य के साथ–साथ जीवन के कटु व यथार्थवादी चित्रण ने उपन्यासों में और भी रोचकता व स्वाभाविकता ला दी है। आपके सभी उपन्यास सामाजिक समस्यात्मक हैं। अस्पृश्यता, मद्यपान, जाति पांति का भेदभाव, यौन समस्या, शिक्षावृत्ति, बेरोजगारी तथा वैवाहिक जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। आपके उपन्यास सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक व राजनीतिक आदि सभी कसौटियों पर खरे उतरे हैं।

अन्ततः हृदयेश जी का सम्पूर्ण कथासाहित्य कथानक, पात्र, संवाद, देशकाल, भाषा और शैली आदि की दृष्टि से ठोस यथार्थ पर आधारित है। अतः उन्हें सर्वगुण सम्पन्न कथाकार कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ0 राजनाथ शर्मा, साहित्यिक निबन्ध, पृ0–586.*
2. *डॉ0 सुधीर कुमार, इलाचन्द्र जोशी : मूल्यांकन, पृ0–160.*
3. *हृदयेश : संपादक – सुधीर विद्यार्थी, पृ0–18.*
4. *हृदयेश : संपादक – सुधीर विद्यार्थी, पृ0–19.*
5. *डा0 श्यामसुन्दर दास साहित्यालोचन, पृ0–175.*
6. *हृदयेश : संपादक – सुधीर विद्यार्थी, पृ0–234.*
7. *हृदयेश : संपादक – सुधीर विद्यार्थी, पृ0–60.*
8. *हृदयेश : संपादक – सुधीर विद्यार्थी, पृ0–30.*
9. *राजनाथ शर्मा – साहित्यिक निबन्ध, पृ0–577.*
10. *मैं अपने बेटे की नौकरी की सिफारिश के लिए उनके पास सात–आठ बार गया। उनके पैर हुए हाथ जोड़े। उन्होंने कहा कि वह डी0एम0 और जनरल मैनेजर से कह देंगे। मगर कहा नहीं।'' हृदयेश : दण्डनायक पृ0–113.*
11. *गरीबों की कहानी लगभग एक जैसी होती है। जिंदगी में उनके हिस्से में केवल दुःख आपदाएँ और दुर्घटनाएं ही आती हैं, अनिवार्य नियति के रूप में – हृदयेश : पगली घंटी, पृ0–63.*
12. *हृदयेश : पगली घंटी, पृ0–94.*
13. *''यहाँ अदालतों में सत्य नहीं जीतता है, जो जीतता है वही सत्य होता है और जीतता वही है, जिसके पास अधिक शक्ति होती है, पैसा होता है, जो गवाहों और पुलिस को तोड़ लेता है और जिसका वकील बड़ा होता है।''*
14. *हृदयेश : सफेद घोड़ा काला सवार, पृ0–136.*
15. *हृदयेश : हत्या, पृ0–97.*
16. *हृदयेश : गांठ, पृ0–96.*